शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नुक्कड़ नाटक और शिवराम

शिवकुमार वर्मा (शोधार्थी)
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान

शोध संक्षेप

रंगशालाएँ और प्रेक्षागृह तो सभ्यता के चरण पार करने के बाद बने होंगे। नुक्कड़ नाटक प्राचीन लोक-नाट्य परम्परा को नये कलेवर में ढ़ाल कर हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। अत: जितनी मानव सभ्यता पुरानी है उतना ही नुक्कड़ नाटक का अतीत। यदि यह कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सृष्टि का पहला नाटक तो कोई नुक्कड़ नाटक ही रहा होगा। सामान्यत: नुक्कड़ नाटक एक ऐसी नाट्य विधा है जो परम्परागत रंगमंचीय नाटकों से भिन्न है । इनके लेखन के लिए राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों और संदर्भों से उपजे विषयों को उठा लिया जाता है और अपने उद्देश्य पूर्ति या विचारधारा से जन सामान्य को अवगत कराने के लिए बुद्धिजीवियों द्वारा किसी नुक्कड़ पर मदारी की तरह मज़मा लगाकर नाटक या तमाशा दिखाया जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में शिवराम के नुक्कड़ नाटक में योगदान पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

दरअसल आजादी से पहले स्वतंत्र भारत में समाजवाद का जो सपना आम आदमी को दिखाया गया । वह सपना ही रह गया और आपातकाल ले दौरान जब उसकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर भी अंकुश लगा दिया गया तो आम जन के सहन की शक्ति समाप्त हो गई। जनता अपने आक्रोश को विभिन्न नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान करने लगी क्योंकि नुक्कड़ नाटक एक आंदोलन कारी विधा है और आंदोलन कभी खत्म नहीं होते। अत: हिंदी में नुक्कड़ नाटकों का भविष्य उज्जवल है।

व्यक्तित्व और कृतित्व

हिंदी के नुक्कड़ नाटक को नयी दिशा देने वाले नाटककार शिवराम का जन्म राजस्थान के करौली नगरी के गढ़ी बांदुवा गाँव में 23 दिसंबर 1949 को एक साधारण परिवार में हुआ। शिवराम ने मेकेनिकल इंजीनिअरिंग का डिप्लोमा अजमेर और विधि स्नातक की उपाधि बारां से प्राप्त की। विज्ञान के विद्यार्थी होने के बाद भी उनकी हिंदी साहित्य, दर्शनशास्त्र, इतिहास और राजनीति शास्त्र पर गहरी पकड़ थी। उन्होंने मार्क्सवाद, लेनिनवाद का गंभीर अध्ययन किया। उन्होंने दूरसंचार विभाग में सहायक के पद पर कार्य किया। नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से वे जनजाग्रति का कार्य करते रहे।

उन्होंने अपना पहला नाटक सन 1970 में 'आगे बढ़ो' लिखा और श्रमिकों के बीच इसका प्रदर्शन किया। आपातकाल से पहले उन्होंने सन 1974 में 'जनता पागल हो गयी है' नाटक लिखा और इसे आज तक खेला जा रहा है। सव्यसाची ने इसे 'उत्तरार्ध' में छापा। हिन्दू ला कॉलेज की नाटी संस्था अभिरंग ने दिल्ली विश्वविद्यालय की अंतर विश्वविद्यालय नाट्य स्पर्धा में मंचन किया और पहला स्थान प्राप्त किया। शिवराम की प्रकाशित पुस्तकें हैं : जनता पागल हो गई है ! (नाटक संग्रह), घुसपैठिये (नाटक संग्रह), रधिया की कहानी (नाटक), दुलारी की मां (नाटक), एक गांव की एक कहानी (नाटक), सूली ऊपर सेज़ (

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

SEZ पर विवेचनात्मक पुस्तक), पुनर्नव (नाट्य रूपांतर संग्रह), गटक चूरमा (नाटक संग्रह), कुछ तो हाथ गहो (कविता संग्रह), खुद साधो पतवार (दोहा संग्रह), माटी मुळकेगी एक दिन (कविता संग्रह)।

शिवराम के नाटक

'जनता पागल हो गयी है' नाटक की अंतर्वस्तु ने इसे आपातकाल के दौरान पूरे देश में काफ़ी लोकप्रिय बना दिया। इसके कई अन्य भारतीय भाषाओं में भी अनुवाद हुए और हिंदी का यह पहला नुक्कड़ नाटक धीरे-धीरे सर्वाधिक खेले जाने वाला नाटक बन गया। शिवराम ने एक आपातकाल विरोधी नाटक 'कुकडूं कूं' लिखा और इसके प्रदर्शन किये। यह भी उस समय 'उत्तरार्ध' में छपा। 'दुःस्वप्न' तथा 'ऑपरेशन जारी है' नाटक भी इसी दौरान लिखे गये, 'दुस्वप्न' रतलाम के 'इबारत' में प्रकाशित हुआ। शिवराम ने सामाजिक यथार्थवादी साहित्य की पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के 36 अंक निकाले। हिंदी के पांच श्रेष्ठ नुक्कड़ नाटकों के एक संकलन में उनका नाटक संकलित हुआ। एनएसडी दिल्ली द्वारा ग्यारह नाटकों का संग्रह प्रकाशित करने की योजना में उनके दो नाटकों का चयन किया गया था। हाल ही डॉ. रवीन्द्र कुमार 'रवि' के निर्देशन में बिहार के एक छात्र ने उन के नुक्कड़ नाटकों पर शोध किया, और पीएच ड़ी की डिग्री प्राप्त की। वर्तमान में देश के कई विश्वविद्यालयों में उनके नाटकों पर शोधात्मक और अनुसंधानात्मक कार्य किए जा रहे है।.उनकी मृत्यु के बाद महेंद्र नेह के संपादन में 'अभिव्यक्त' के 39वें अंक को शिवराम विशेषांक के रूप में निकाला गया, जिसमे राजाराम भादू, हेतु भारद्वाज, रमेश उपाध्याय, वेदव्यास, स्वयं प्रकाश, डॉ. पल्लव, नन्द भारद्वाज, अम्बिका दत्त चतुर्वेदी, ओम नागर, आदि रचनाकरों ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए अपने आलेखों से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।. सन 2012 में राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर ने 'हमारे पुरोधा' योजना की 27वीं कड़ी में स्मृतिशेष प्रतिष्ठित नाटककार, रंगकर्मी, और कवि शिवराम के व्यक्तित्व और कृतित्व पर ग्रन्थ प्रकाशित किया।

स्वतंत्रता के पश्चात उत्तर औपनिवेशिक भारत में पूंजीवादी-सामंती व्यवस्था से मोहभंग के कारण छायावादोत्तर एक दूसरी परम्परा निर्मित व विकसित हुई। जिसके निर्माण में नागार्जुन, मुक्तिबोध, धूमिल, दुष्यंत, निराला, यशपाल, रामविलास शर्मा, शिवदान सिंह चौहान, आदि की महत्वपूर्ण सृजनात्मक भूमिका थी। शिवराम आख्यान की उसी दूसरी परम्परा के संघर्षशील सृजनकर्मी थे। जिनका प्रसिद्ध नाटक 'जनता पागल हो गई है' आपातकाल के दौरान 1974 से पहले सव्यसाची द्वारा संपादित पत्रिका 'उत्तरार्द्ध' में प्रकाशित हुआ। जिससे शिवराम भारत के श्रेष्ठतम नुक्कड़ नाटककारों की श्रेणी में शामिल हो गए। यह देश में सर्वाधिक मंचित व लोकप्रिय नुक्कड़ नाटक रहा। (अभिव्यक्ति अंक-39 पृ.- 105,132, 221)

'जनता पागल हो गई है!' पुस्तक के कवर पेज पृष्ठ पर भूमिका में डॉ. हेतु भारद्वाज लिखते है कि "सामान्यतः सफ़दर हाशमी को नुक्कड़ नाटक आरम्भ करने का श्रेय दिया जाता है, लेकिन इस पुस्तक में संकलित शिवराम के कई नाटक सफ़दर हाशमी से पूर्व खेले जाते रहे हैं। अतः इस आधार पर हम शिवराम को नुक्कड़ नाटकों के प्रवर्तकों की श्रेणी में शामिल करें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

'जनता पागल हो गई है' की लोकप्रियता का राज़ सिर्फ यह नहीं था कि वह हिंदी का पहला नुक्कड़ नाटक था बल्कि यह था कि उसके चरित्रों में आम लोगों ने खुद को देखा और यह जनता की पीड़ाओं तथा उसके शोषण और सत्ता के साथ मिलकर पूंजी की लूट, राज्य और पुलिसिया तंत्र की सांठगांठों और बर्बरता को सामने लाता है और साथ ही जनता तथा जनपक्षकारी शक्तियों के प्रतिरोधों, संघर्षों और उनकी मुक्तिकामी इच्छाओं को भी सकारात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करता है। (अभिव्यक्ति अंक-39 पृ.-104) यथा सम्पूर्ण देश की जनता का प्रतिनिधित्व करने वाली 'जनता' पात्र का यह कथन पूरी व्यवस्था की हक़ीकत बयां करता है -

ओ ! मेरी सरकार, मेरी अन्नदाता, माई बाप
पांच बरसों में दिखाई दी नहीं इक बार आप
मालदारों ने घुड़क कर छिन ली रोटी मेरी
चूस ली हड्डी, चबाई जिस्म की बोटी मेरी
खेत सूखे, पेट भूखे, गांव है बीमार
हम लोगों की मेहनत, कोठे भरता जमींदार
देह सूखी, प्राण सूखे, सूना सब संसार
कोई सुनता नहीं हमारी क्या बोले सरकार (जनता पागल हो गई है पृष्ठ सं.- 12)

ढोर डागर मर गए सब, खेत पडे वीरान
तिस पर बनियां और पटवारी मांगे ब्याज लगान
बालक भूखे मरें हमारे, हम कुछ ना कर पायें
ऐसी हालत है घर-घर में, जीते जी मर जाएँ
(जनता पागल हो गई है पृष्ठ सं.- 14)

निष्कर्ष

शिवराम शोषित-पीड़ित आम आदमी के प्रति गहन संवेदना रखने वाले प्रगतिशील नाटककार थे । जिनका उद्देश्य सिर्फ लेखन तक सीमित नहीं था बल्कि पूंजीवादी-सामंती व्यवस्था और सत्ता के विरुद्ध जन संघर्ष करते हुए देश में भेदभाव रहित शोषण विहिन समतामूलक समाजवादी व्यवस्था की स्थापना करना था। (अभिव्यक्ति अंक-39 पृ.-49) उनके नाटकों में मुख्य रूप से शोषण और बेगारी के खिलाफ आवाज़ उठाई गई है एवं जनता को वे नाटकों के माध्यम से इस पूंजीवादी व्यवस्था का ताना-बाना उधेड़कर दिखाते रहे है। वह अपनी विचारधारा को आमजन के मन: मस्तिष्क में पहुंचाकर इस व्यवस्था के विरूद्ध सोचने के लिए मजबूर करना चाहते थे और यही कारण है कि वह अपनी बात कहने के लिए रोटी कपड़ा और मकान की बुनियादी आवश्यकता पूर्ति मे व्यस्त जनता के प्रेक्षागृह में आने का इंतजार नहीं करते वरन नुक्कड़ नाटक के माध्यम से प्रेक्षागृह को ही जनता के मध्य ले जाते है।

संदर्भ ग्रंथ

1 हिंदी रंगकर्म : दशा और दिशा, जयदेव तनेजा, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली

2 नुक्कड़ नाटक , चन्द्रेश, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली

3 'हमारे पुरोधा-शिवराम', महेन्द्र नेह, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

4 जनता पागल हो गई है !, शिवराम, बोधि प्रकाशन जयपुर

5 अभिव्यक्ति अंक-39 शिवराम विशेषांक, संपादक-महेन्द्र नेह, कोटा

6 नुक्कड़ पर प्रतिरोधी नाटक (आलेख) , डा. सुभाष चन्द्र